



PROF. RAJENDRA MISHRA

Prof. Rajendra Mishra is the Ex-Vice Chancellor of the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi currently serving as the Convener of Sanskrit language in Sahitya Akademi, New Delhi. He is widely recognized and praised across the world for his contribution to the field of literature and education in Sanskrit, Hindi, Bhojpuri, English and Old Javanese languages.

2. Born on 2nd January, 1943, Prof. Mishra received his Bachelor of Arts degree from the Allahabad University in 1962. He stood First class First in the M.A examination of the University in 1964 and topped in the Faculty of Arts for which he was awarded Pt. Ganga Prasad Upadhyay Gold Medal and Queen Victoria Silver Medal. Later, he took his researches on "The Origin and Development of Anyokti in Sanskrit Literature" under the supervision of Prof. A.P Mishra and received his D. Phil Degree in 1966. In 2004 he received his D. Litt degree from the Himachal Pradesh University, Shimla for his research on, "The Comparative Study of The Valmiki's and Old Javanese Ramanayas". He was appointed lecturer in the Sanskrit department of the Allahabad University in 1966 soon before receiving his D. Phil degree.

3. In 1983, Prof. Mishra was appointed Reader and in 1991, he was appointed as the Professor and Head of the Sanskrit department at Himachal Pradesh University, Shimla. Meanwhile the Government of India (ICCR), New Delhi appointed him the Visiting Professor at Udayan University, Denpasar, Bali (Indonesia) in April 1987. He stayed there up to 1989 and earned much name and fame through his epoch-making literary and research works which include the Devnagari Transcription and Hindi translation of the Old Javanese Ramayan Kakavin, along with 44 sporadic poems and articles.

4. During his service period (1991- 2003) at H.P. University Shimla, Prof. Mishra held the offices of the H.O.D, Dean Faculty of Languages, Member of the Executive Council and the convener of The Cultural Committee. In 2002, he was appointed The Vice Chancellor of the most reputed Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi and there after he availed several other offices like Salahkar, Visiting Professor and Director etc. He has more than 200 books published under his name, where he has composed and published 2 voluminous epics- Janaki Jeevnam and Vamanavatarnam, 20 Khandkavyas, 7 Poem Collections, 6 Ghazal Collections, 12 One-Act Play Collections (85 one-act plays in all), 4 Natak and Natikas, 9 Story Collections, 17 Critical Works (Hindi, Sanskrit, English) and 8 Text Books. Apart from this he has compiled and edited several Anthologies for Sahitya Akademi, Delhi Sanskrit Akademi and other Institutions.

5. During his service period (1966-2005) at the University of Allahabad, H.P University, Shimla and Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, Prof Mishra produced 52 D. Phils/Ph. Ds and Vidyavaridhis along with one D. Litt. More than 68 students have received their Ph. D degree based on his literature and 40 others are still working, throughout the country. He has published more than 350 research papers and literary articles in Sanskrit, Hindi and English. He has published about 1450 sporadic poems, one act plays, stories, memoirs, travelogues etc. in Sanskrit, Hindi and English in several national and foreign magazines.

6. Prof. Mishra has received several honours and awards including Manas Sangam Sahitya Samman, Kanpur in 2003; Pandit Raj Jaganatha Samman Devavani Parishad, New Delhi; Vidyotamma Samman (along with Rs 21,000) by Sri Ram Sevanyas, Mouni Baba Ashram, Ujjain, Madhya Pradesh; Sahasrabdi Ratna Samman; Gemini Akademi, Panipat, Haryana; Dr. Ram Kumar Verma Ekanki Puraskar awarded under Shakuntala Sirothia Awards, Allahabad 1988; Rashtriya Atma Puraskar, Kanpur, Uttar Pradesh On poem collection Sapano Me Doob gaya Man; Pandit Ratan Samman awarded by the Sanskrit Parishad, Varanasi, Uttar Pradesh; Swami Unarmanana Saraswati Sahitya Samman awarded by the Parmarth Ashram, Haridwar 1994; Dr. Vidya Niwas Mishra Sanskrit Samman awarded by the Sahitrya Parishad, Ghoraval, Sonbhadra, U.P 2000; Vyakhayana Vachaspati awarded by the Pandit Parishad, Varanasi, U.P 2004; Brahmarsi Samman awarded by the Brahmarsi Devaraha Baba Nyas, Mail, Devaria, U.P 2004; Mahamahopadhyay awarded by the Sanatan Dharma Sangha, Varanasi, U.P 2004; Swami Swarupanand Ji, Shrimatha, Kedarghat, Varanasi, U.P 2005 and by Hindi Sahitya Sammelan, Allahabad, U.P.; Sahitya Academy Award on Ikshugandha-1988; Vachaspati Samman on Janakijeevnam Mahakavya-1993 by K.K Birla Foundation, New Delhi; Kalpavalli Samman on Vidyotamma Natika- 1998 Bhartiya Bhasha Parishad, Kolkata; Rashtrapati Samman- 1999; Presidential Certificate of Honor for Sanskrit Service; Valmiki Puraskar- 2009; UP Sanskrit Sansthan, Lucknow; Sahitya Akademi Bal Sahitya Samman for Kaumaram- 2011; Sahitya Akademi Anuvaad Puraskar for Vijayparva- 2013; Deen Dayal Upadhyay Sahitya Samman- 2014 by UP Hindi Sansthan, Lucknow; Vishwa Bharti Samman-2015, The highest Sanskrit award of UP Sanskrit Sansthan, Lucknow; Kalidasa Samman (twice) - 1988, 1998; MP Government, Bhopal; Magh Puraskar – 1991; Adityanath Jha Samman – 1998; Delhi Sanskrit Akademi, Delhi Government; Veda Bharti Puraskar – 2002; Achyutram Sharma Trust A.P Government, Hyderabad; Kavi Kul Guru Kalidasa Samman - 2004 Maharashta Government, Mumbai; Vidyalankar Samman - 2007 West Bengal Government, Kolkata; Rajaprabha Samman - 2011 Kerala Government, Trichur; Sulalit Saraswati Puraskar – 2011, Kendubilva, Puri, Orissa Government; Kalidasa Puraskar – 2015, UP Sanskrit Sansthan, Lucknow and Vishishta Puraskar (for Sanskrit services), UP Sanskrit Sansthan, Lucknow.





प्रो. राजेन्द्र मिश्र

प्रो. राजेंद्र मिश्र वर्तमान में सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के पूर्व कुलपति हैं। वह वर्तमान में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली में संस्कृत भाषा के संयोजक के रूप में कार्यरत हैं। संस्कृत, हिंदी, भोजपुरी, अंग्रेजी और पुरानी जावानी भाषाओं के साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उनका अत्यंत सम्मान और सराहना की जाती है।

2. 2 जनवरी, 1943 को जन्मे प्रो. मिश्र ने 1962 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से कला स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने 1964 में विश्वविद्यालय की एमए परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त की और कला संकाय में शीर्ष स्थान प्राप्त करने के लिए उन्हें पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय गोल्ड मेडल और क्वीन विक्टोरिया सिल्वर मेडल से सम्मानित किया गया । बाद में, उन्होंने प्रो. ए.पी. मिश्रा की देखरेख में 'द ओरिजिन एंड डेवलपमेंट ऑफ अनयोक्ति इन संस्कृत लिटरेचर' पर शोध किया और 1966 में डी.फिल की डिग्री प्राप्त की। 2004 में उन्होंने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला से अपने शोध, ''द वाल्मिकीज एंड ओल्ड जावानीस रामानायस के तुलनात्मक अध्ययन'' के लिए डी.लिट की डिग्री प्राप्त की। डी. फिल की डिग्री प्राप्त करने के तुरंत पहले उन्हें 1966 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में व्याख्याता नियुक्त किया गया था।

3. 1983 में, प्रो. मिश्र को रीडर नियुक्त किया गया था और 1991 में, उन्हें हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में संस्कृत विभाग के प्रोफेसर और प्रमुख के रूप में नियुक्त किया गया था। इस बीच, भारत सरकार (ICCR), नई दिल्ली ने उन्हें अप्रैल, 1987 में उदयन विश्वविद्यालय, देनपसार, बाली (इंडोनेशिया) में विजिटिंग प्रोफेसर नियुक्त किया। उन्होंने वहां 1989 तक काम किया और अपने युगप्रवर्त्क साहित्य और अनुसंधान के माध्यम से अत्यंत ख्याति अर्जित की। ऐसी रचनाओं में 44 छिटपुट कविताएँ और लेख के साथ–साथ और प्राचीन जावानी रामायण काकविन का देवनागरी लिप्यंतरण और हिंदी अनुवाद शामिल हैं।

4. अपने कार्यकाल (1991– 2003) के दौरान प्रो. मिश्र ने एच.पी. विश्वविद्यालय शिमला, के विभागाध्यक्ष, भाषाओं के डीन फैकल्टी, कार्यकारी परिषद के सदस्य और सांस्कृतिक समिति के संयोजक के रूप में कार्य किया। 2002 में, उनको सबसे प्रतिष्ठित सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी का कुलपति नियुक्त किया गया और इसके बाद वह सलाहकार, विजिटिंग प्रोफेसर और निदेशक आदि जैसे कई अन्य पदों पर आसीन हुए। उनकी 200 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इनमें उनके 2 खण्डों में महाकाव्य– जानकी जीवनम् और वामनवतारम, 20 खंडकाव्य, 7 कविता संग्रह, 6 गजल संग्रह, 12 एकांकी नाटक संग्रह (85 एकांकी नाटक), 4 नाटक और नाटिकाएं, 9 कहानी संग्रह हैं, 17 आलोचनात्मक कार्य (हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी) और 8 पाठ्य पुस्तकें शामिल हैं। इसके अलावा, उन्होंने साहित्य अकादमी, दिल्ली संस्कृत अकादमी और अन्य संस्थानों के लिए कई संकलनों का संपादन किया है।

5. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला और सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में अपने सेवाकाल (1966–2005) के दौरान, प्रो. मिश्र ने एक डी.लिट के साथ–साथ 52 डी. फिल / पीएच.डी और विद्या वृद्धि तैयार किए। 68 से अधिक छात्रों ने उनके साहित्य पर आधारित अपनी पीएचडी की डिग्री प्राप्त की है और अभी पूरे देश में 40 अन्य विद्यार्थी कार्य कर रहे हैं। उन्होंने संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी में 350 से अधिक शोध पत्र और साहित्यिक लेख प्रकाशित किए हैं। उन्होंने कई राष्ट्रीय और विदेशी पत्रिकाओं में संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी में 1450 छिटपुट कविताएं, एकांकी नाटक, कहानियां, संस्मरण, यात्रा–वृत्तांत आदि प्रकाशित किए हैं।

6. प्रो. मिश्र को कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें 2003 में मानस संगम साहित्य सम्मान, कानपुर; पंडित राज जगन्नाथ सम्मान देववाणी परिषद, नई दिल्ली; श्री राम सेवान्यास, मौनी बाबा आश्रम, उज्जैन, म.प्र. द्वारा विद्योत्तमा सम्मान (21000 रु. सहित); सहस्राब्दि रत्न सम्मान; जेमिनी अकादमी, पानीपत, हरियाणा; शकुंतला सिरोठिया पुरस्कार के अंतर्गत डॉ. राम कुमार वर्मा एकांकी पुरस्कार, इलाहाबाद 1988; कविता संग्रह 'सपनो में डूब गया मैं' काव्य संग्रह पर कानपुर, यू.पी. द्वारा राष्ट्रीय आत्मा पुरस्कार, संस्कृत परिषद, वाराणसी, उ.प्र. द्वारा पंडित रतन सम्मान; परमार्थ आश्रम, हरिद्वार 1994 द्वारा प्रदत्त स्वामी उनरमनन सरस्वती साहित्य सम्मान; साहित्य परिषद, घोरावल, सोनभद्र, यूपी द्वारा डॉ. विद्या निवास मिश्र संस्कृत सम्मान 2000; पंडित परिषद, वाराणसी, यू.पी. द्वारा व्याख्यान वाचस्पति 2004; ब्रह्मर्षि देवरहा बाबा न्यास, मेल, देवरिया, यू.पी. द्वारा ब्रह्मर्षि सम्मान 2004; सनातन धर्म संघ, वाराणसी, यू.पी. द्वारा 2004 में; स्वामी स्वरूपानंद जी, श्रीमठ, केदारघाट, वाराणसी, यू.पी. द्वारा 2005 में और हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, उ.प्र . द्वारा महामहोपाध्याय; इक्षुगंधा पर साहित्य अकादमी पुरस्कार,1988; केके बिड़ला फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा जनकजीवनम महाकाव्य पर वाचस्पति सम्मान–1993; भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता द्वारा विद्योत्तमा नाटिका पर कल्पवल्ली सम्मान– 1998; राष्ट्रपति सम्मान– 1999; संस्कृत सेवा के लिए राष्ट्रपति प्रमाण पत्र; वाल्मीकि पुरस्कार– 2009; यूपी संस्कृत संस्थान, लखनऊ; कुमारम के लिए साहित्य अकादमी बाल साहित्य सम्मान– 2011; विजयपर्व के लिए साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार–2013; यूपी हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा दीन दयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान– 2014; विश्व भारती सम्मान –2015, यूपी संस्कृत संस्थान, लखनऊ का सर्वोच्च संस्कृत पुरस्कार; कालिदास सम्मान (दो बार) – 1988, 1998; मप्र सरकार, भोपाल; माघ पुरस्कार–1991; आदित्यनाथ झा सम्मान – 1998; दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार; वेद भारती पुरस्कार–2002; अच्युतराम शर्मा ट्रस्ट आंध्र प्रदेश सरकार, हैदराबाद; कवि कुल गुरु कालिदास सम्मान–2004 महाराष्ट्र सरकार, मुंबई; विद्यालंकार सम्मान – 2007 पश्चिम बंगाल सरकार, कोलकाता; राजप्रभा सम्मान – 2011 केरल सरकार, त्रिचूरय सुललित सरस्वती पुरस्कार–2011, केंदुबिल्व, पुरी, उड़ीसा सरकार; कालिदास पुरस्कार–2015, यूपी संस्कृत संस्थान, लखनऊ और विशिष्ट पुरस्कार (संस्कृत सेवा के लिए), यूपी संस्कृत संस्थान, लखनऊ शामिल हैं।